मिशन शिक्षण संवाद

काव्यरूप संस्कृत (वर्तिका)

5

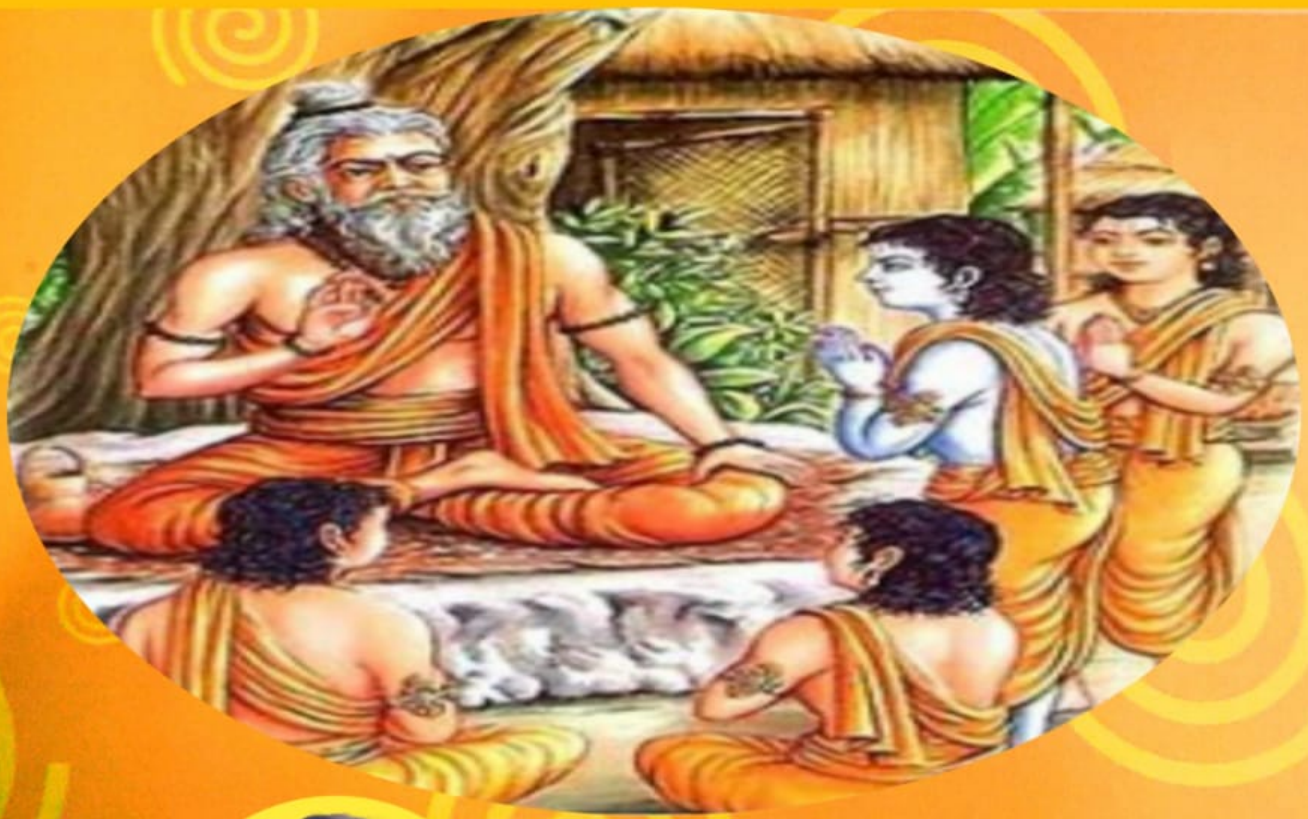

निर्माण कर्ता
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर
वि ०ख० लोधा, जनपद अलीगढ़

पाठ- 1

वन्दे सदा स्वदेशम्

स्वदेश को करो नमन,
स्वदेश का करो वंदन।
ऐसा अपना प्यारा देश,
इसका करो सदा पूजन।।

मस्तक पर सजती है,
जिसके पवित्र गंगा।
कमर पर सुशोभित,
जिसके नदी नर्मदा।।

नमन करो झंडे को,
जो है तिरंगा प्यारा।
नमन करो उस देश को,
जो है स्वतंत्र हमारा।।

स्वदेश को करो नमन,
स्वदेश का करो वंदन।
ऐसा अपना प्यारा देश,
इसका करो सदा पूजन।।

पाठ- 2

वाक्यबोधः (प्रथम)

अयं का अर्थ होता है यह,
यह होता है एकवचन।
इसी तरह एषः होता यह,
एषः भी है एकवचन।।

इमौ का अर्थ होता है ये दोनों,
ये दोनों होता है द्विवचन।
इसी तरह एतौ होता ये दोनों,
एतौ भी है द्विवचन।।

इमे का अर्थ होता है ये सब,
ये सब होता है बहुवचन।
इसी तरह एते होता ये सब,
एते भी है बहुवचन।।

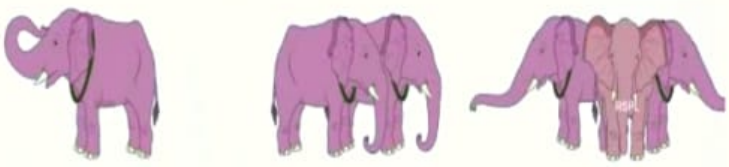

अयं, इमौ, इमे,
पुल्लिंग के भेद बताते।
एषः, एतौ, एते,
वचन भेद हमें समझाते।।

पाठ- 3
वाक्यबोधः (द्वितीय)

एतत् का अर्थ होता है यह,
तत् का अर्थ होता है वह,
यह होती है पास की वस्तु।
दूर की वस्तु होती वह।।

ये दोनों की संस्कृत एते,
पास है दोनों एते बतलाता।
ते का अर्थ होता ये दोनों,
दूर हैं दोनों ते समझाता।।

एतानि का अर्थ होता है ये सब,
पास है ये सब वस्तुएँ।
इसी तरह तानि होता वे सब,
दूर हैं वे सब वस्तुएँ।।

पास हो तो क्या कहेंगे,
दूर हैं तो क्या कहेंगे।
साथ वचन का भेद बताते,
सभी संस्कृत हमें समझाते।।

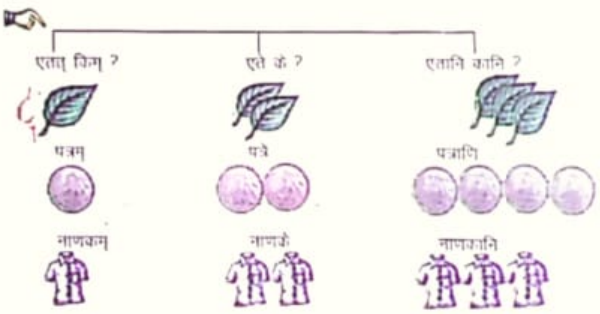

पाठ- 4

वाक्यबोधः (तृतीय)

पास में लड़की पढ़ती है तो,
एषा छात्रा पठति होता।
दूर गायिका गाती है तो,
सा गायिका गायति होता।।

पास में जब दो बालिका खेलें,
एते क्रीडतः कहलाता।
दूर जब दो बकरी चरती,
ते चरतः तब बन जाता।।

पास में होती बहुत लड़कियाँ,
बहुवचन स्त्रीलिंग होता।
जिसकी संस्कृत होती एताः,
ये सब जिसका अर्थ है होता।।

दूर होती बहुत लड़कियाँ,
ताः बालिकाः संस्कृत होती।
ताः मतलब स्त्रीलिंग बहुवचन,
संस्कृत हमें यह भेद बताती।।

पाठ-5

वाक्यबोधः (चतुर्थ)

त्वं, युवां और यूयं
समझो बच्चों इनको ऐसे।
तुम, तुम दोनों और तुम सब,
अर्थ होते हैं ये इनके।।

अहं, आवां और वयं,
समझो बच्चों इनको ऐसे।
मैं, हम दोनों और हम सब,
अर्थ होते हैं ये इनके।।

त्वं कः? मतलब तुम कौन हो?
कोइ प्रश्न करे जब तुमसे?
अहं दिनेशः मैं दिनेश हूँ,
अपना नाम बताओ ऐसे।।

त्वं, अहं है एकवचन,
युवां, आवां द्विवचन।
यूयं, वयं है बहुवचन,
समझ गये तुम सभी वचन।।

पाठ- 6

अव्यय शब्दाः

किसी भी भाषा के वे शब्द,
अव्यय कहलाते हैं।
जिनके रूप में हम कोई,
विकार नहीं पाते हैं।।

कोई लिंग हो, कोई वचन हो,
कोई पुरुष, कारक या काल,
ऐसे शब्द मूलरूप में बने रहते,
हर स्थिति, हर हाल।।

कुत्र-कहाँ, सम्प्रति-इस समय,
कदा-कब, अपि-भी।
प्रातः-सुबह, किम्-क्या,
सदा-हमेशा, एव-ही।।

ऐसे ही कुछ शब्द है अव्यय,
जिनका अर्थ रहे समान।
चाहे स्त्री हो या पुरुष,
चाहे भूत हो या वर्तमान।।

पाठ- 7

एहि एहि वीर रे

एहि वीर, एहि वीर,
वीर तुम आओ रे।
भारत की रक्षा के लिए,
जीवन बलि कर जाओ रे।।

मार्ग के दर्शक हो तुम,
देश के रक्षक हो तुम।
शत्रु के नाशक हो तुम,
देशप्रेम के वर्धक हो तुम।।

साहस की खान हो,
वीर तुम महान हो।
भारतीय संस्कृति का,
मन में तुम्हारे मान हो।।

साथ साथ मिल चलो,
उत्साह मन में रखो।
भारत के मानहेतु,
युद्ध में विजयी हो।।

पाठ- 8

यातायात सङ्केताः

दादा के संग निखिल जब,
घूमने जाता है एक नगर।
मार्ग पर करने में,
चौराहे पर गया वो डर।।

दादा बोले निखिल सीखो,
नियम यातायात के।
तीन रंग सङ्केत देखो,
यह हैं बड़े काम के।।

लाल कहता रुक जाओ तुम,
पीला बोले रहो तैयार।
हरी बत्ती जब जल जाए,
चलो तुम बनके होशियार।।

श्वेत श्याम रंगों की पंक्ति,
जेब्रा क्रॉसिंग कहलाए।
वाहन सारे जब रुक जाएं,
पैदल इस पर चले जाएं।।

पाठ- 9 (लघु परिवारः)

घर मेरा यह छोटा सा है,
पर खुशियां लाए अपार।
मिलकर सब रहते हैं यहां,
कहलाता लघु परिवार।।
माता और पिता संग मेरे,
बहुत ही सीधी मेरी आई।
बड़ी सुशीला मेरी बहना,
मैं भी बहुत ही अच्छा भाई।।
दादी-दादा संग में रहते,
ना गरीब, ना बहुत अमीर।
भाई-बहन में भेद ना करते,
ऐसी पाई है तकदीर।।
नहीं कोई दुख है यहां,
यह मेरा प्यारा परिवार।
देखने वाले खुश होते हैं,
ऐसा है मेरा परिवार।।

पाठ- 10
जन्मदिनम्

आज जन्मदिन है सुरेखा का,
प्रातः उठ स्नान किया।
नूतन वस्त्र पहन कर उसने,
मात-पिता को नमन किया।।

घर सजाया सब ने मिलकर,
मित्रों को फिर फोन किया।
सायं सात बजे आना है,
सबसे ऐसा आग्रह किया।।

सायं काल सब आते हैं,
सब मिल ताली बजाते हैं।
जन्म दिवस शुभ हो तुम्हारा,
कहकर उपहार देते हैं।।

धन्यवाद कहा सुरेखा ने,
फिर सब ने खाई खूब मिठाई।
पुनः पुनः शुभकामना देते,
अपने घर सब जाते भाई।।

पाठ- 11
चटका

एक दिवस सौएम्या बैठी थी,
प्राङ्गण में पुस्तक पढ़कर।
तभी एक चिड़िया वहां आई,
बैठ गई वह खिड़की पर।।

सूखे पत्ते ला करके,
नीड़ बनाया चिड़िया ने।
लघु पात्र में जल रखा,
अन्न भी रखा फिर सौम्या ने।।

जल पीती और अन्न वह खाती,
अंडों की रक्षा करती है।
एक बार एक काक: आया,
चिड़िया वह डर जाती है।।

जाल ला कर,नीड़ पर रखकर,
अंडों की सौम्या ने रक्षा की।
चिड़िया खुश हो चिवँ-चिवँ करती,
सौम्या देख प्रसन्न हुई।।

पाठ- 12
सिद्धार्थ

हमारे भारत देश में,
बहुत हुए हैं महापुरुष।
उन महापुरुषों में,
एक थे गौतम बुद्ध प्रमुख।।

बचपन में सिद्धार्थ नाम था,
अति दयालु करते उपकार।
खेलों में मन नहीं लगता था,
ना करते थे कोई शिकार।।

भ्रमण में क्रमशः एक वृद्ध,
मृत, रोगी और संन्यासी देखा।
मन वैरागी हुआ देखकर,
पत्नी, बेटे, राज्य को छोड़ा।।

भगवान बुद्ध कहलाए वो,
कठिन तपस्या करी अपार।
अहिंसा पालन उनकी शिक्षा,
बौद्ध धर्म का किया प्रचार।।

पाठ- 13
विज्ञान-युगम्

आज का युग विज्ञान का युग है,
चहुंओर विज्ञान के चमत्कार।
बिजली से घर जगमगाता,
पंखा देता वायु अपार।।

दूरभाष से देश-विदेश में,
बात करना हुआ आसान।
आकाशवाणी से समाचार सुनो,
दूरदर्शन से ले लो ज्ञान।।

वायुयान हो या हो मेट्रो,
दूर दूर जा सकते हैं।
कंप्यूटर से अनेकों कार्य,
पल में हल हो सकते हैं।।

भोजन भी अब गैस पर देखो,
जल्दी से बन जाता है।
सभी तरफ विज्ञान चमत्कारी,
हमें तो नजर आता है।।

पाठ- 14 (सुभाषितानि)

आलसी को नहीं आती विद्या,
विद्या नहीं तो धन कहा।
धन नहीं तो मित्र नहीं है,
मित्र नहीं तो सुख कहां।।

चोर चुराएं ना राजा छीने,
भाई ना बाटे, ना भार है।
व्यय करने से बढ़ती जाती,
विद्या तो उपहार है।।

हर पर्वत पर मणि नहीं होता,
मोती ना होता हर गज में।
सज्जन सभी जगह नहीं होते,
चंदन ना होता हर वन में।।

कार्य पूर्ण होते हैं परिश्रम से,
मन में सोचकर नहीं होते।
सोते हुए शेर के मुख में,
मृग प्रवेश नहीं करते।।

फलदार वृक्षों को पूजते,
गुणी लोगों को करें नमन।
सूखे वृक्ष और मूर्खों का,
कभी नहीं करते पूजन।।

पाठ- 15

महामनामदनमोहन मालवीयः

महामना मदन मोहन मालवीय,
प्रयाग नगर में जन्मे थे।
मां श्रीमती मोना देवी उनकी,
पिताश्री ब्रजनाथ मालवीय थे।।

बचपन में संस्कृत पढ़े,
महान देशभक्त कहलाए।
उच्च शिक्षा प्राप्त करके,
राजकीय विद्यालय में शिक्षक बन आए।।

शिक्षक पद को त्याग कर,
यह महापुरुष वकील बने।
शिक्षाविद, राजनीतिज्ञ,
भारतीय संस्कृति के संरक्षक बने।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय की,
स्थापना यह कर गए।
भारत के सर्वोच्च सम्मान,
भारत रत्न से सम्मानित हुए।।

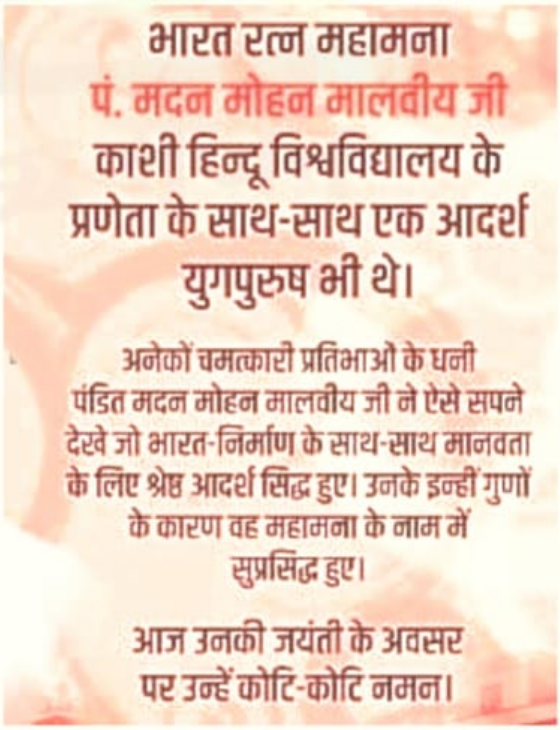

पाठ- 16
काकस्य उद्यमः

एक जंगल में एक कोआ था,
प्यास से था वो तो व्याकुल।
इधर उधर सब जगह देखा,
कहीं नहीं मिला उसको जल।।

अन्त में एक घड़ा मिला उसको,
उसमें था थोड़ा पानी।
पीने में असमर्थ जानकर,
मन में उसने यह ठानी।।

दूर पड़े पत्थर के टुकड़े,
एक एक कर वो ले आया।
ज्यों ज्यों डाले उसने घड़े में,
त्यों त्यों जल ऊपर आया।।

जल पीकर फिर प्यास बुझाई,
श्रम का फल उसने पाया।
परिश्रम से कार्य है होते,
सबने यही है सिखलाया।।

पाठ- 17
ईद महोत्सवः

रहीम, करीम और रेशमा,
छत पर चले चांद देखने।
भाई ईद कब होगी अब,
ऐसा लगे सभी पूछने।।

आज चंद्र दर्शन हुए तो,
कल ईद महोत्सव होगा।
दोस्त! यह निर्णय कौन करेगा,
कौन हमें यह बतलाएगा।।

मित्र! दिल्ली में महोदय,
रात्रि में घोषणा करेंगे।
कल हम सब प्रातः मिलकर,
नए वस्त्र पहन ईदगाह चलेंगे।।

भाई इस उत्सव में मिलते,
हिन्दू हो या सिक्ख-ईसाई।
उनका स्वागत धर्म हमारा,
हम आपस में भाई-भाई।।

पाठ- 18
अहिंसा परमो धर्मः

सिंहासन पर बैठा सिंह,
आज्ञा देता है सियार को।
मंत्री! प्रत्येक पशु को जाकर,
जंगल आने का आमंत्रण दो।।

भालू भी हो, उल्लू भी हो,
हाथी, चीता, नाग भी हो।
बिल्ली, नेवला, सूअर और मगर,
सबको प्रेम से निमंत्रण दो।।

वर्षा का मौसम जब आए,
हरा भरा जंगल हो जाए।
व्याघ्र बैर छोड़ तब आए,
मेंढक मधुर मल्हार सुनाए।।

नाचे तब सदा मयूर हो,
सब निर्भीक ना कोई क्रूर हो।
अहिंसा परम धर्म हमारा,
सारे विश्व में यह जरूर हो।।

पाठ- 19 (भाग - 1)
चंद्रशेखर आज़ादः

भारत के देशभक्तों में,
सबसे ऊंचा इनका नाम।
माता इनकी थी जगरानी,
पिता श्री सीताराम।।

जन्म इनका हुआ जहां पर,
वो मध्य प्रदेश का भावरा ग्राम।
चन्द्र शेखर आजाद है,
उस वीर देशभक्त का नाम।।

नरेंद्र देव आचार्य ने,
इन को शिक्षा दिलवाई।
काशी विद्यापीठ में,
शिक्षा की व्यवस्था करवाई।।

**मैं आजाद हूँ,
आजाद रहूँगा और
आजाद ही मरूंगा"**

विद्यापीठ के छात्रों के संग,
आंदोलन में सम्मिलित हुए।
तीन रंग के ध्वज को लेकर,
न्यायधीश के सम्मुख उपस्थित हुए।।

पाठ- 19 (भाग 2)

चंद्रशेखर आज़ादः

जय हो महात्मा गांधी,
जय हो भारत माता।
न्यायालय में उन्होंने,
गाई यह जयगाथा।।

पूछा न्यायाधीश ने इनसे,
नाम क्या है तुम्हारा।
तन कर यह उत्तर दिया
आजाद नाम है मेरा।।

क्रुद्ध न्यायाधीश ने,
15 कोड़े का दण्ड दिया।
भारत मां का जयकारा बोल,
हंस करके सब सहन किया।।

प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क में,
अंग्रेजों ने इनको घेर लिया।
उन्होंने गोली दागी इन पर,
तब गोली से प्रहार किया।।

अंतिम गोली बची एक तो,
खुद को मार शहीद हुए।
आजीवन ये रहे आजाद
मरकर भी ये अमर हुए।।

**"मैं आजाद हूँ,
आजाद रहूँगा और
आजाद ही मरूंगा"**